जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

7 फरवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 'सूफीवाद और शिक्षा के माध्यम से समाज का विकास' पर डॉ. सलामतुल्लाह स्मारक व्याख्यान का आयोजन किया

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय में भारतीय भाषा समिति के सलाहकार प्रो. एस.एम. अजीजुद्दीन हुसैन ने कल "सूफीवाद और शिक्षा के माध्यम से समाज का विकास - दक्कन का एक केस स्टडी" विषय पर डॉ. सलामतुल्लाह स्मारक व्याख्यान दिया। स्मारक व्याख्यान का आयोजन जामिया मिल्लिया इस्लामिया के शिक्षा संकाय के शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग द्वारा किया गया था।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति प्रो. मजहर आसिफ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम की शुरुआत बी.एड. के छात्र मोहम्मद मतलूब रजा द्वारा क़िरात से हुई और तदुपरान्त श्री जीशान अहमद ज़मीर और उनकी टीम द्वारा तराना-ए-जामिया की प्रस्तुति दी गई तथा डॉ. एरम खान द्वारा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया गया। डॉ. सलामतुल्लाह के परिवार के सदस्यों और अतिथि वक्ता प्रो. एस.एम. अजीजुद्दीन हुसैन को विभाग के संकाय सदस्यों और छात्रों द्वारा बनाए गए अंगवस्त्रम, पौधे और मिरर पाईंटिंग्स से सम्मानित किया गया। शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. जेसी अब्राहम ने विद्वानों और छात्रों के साथ-साथ विभाग के गणमान्य व्यक्तियों, पूर्व संकाय सदस्यों और सहकर्मियों का स्वागत किया। उन्होंने श्रोताओं को डॉ. सलामतुल्लाह स्मारक व्याख्यान के महत्व के बारे में जानकारी दी जिसका आयोजन 2003 से किया जा रहा है। स्मारक व्याख्यान ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में महिला शिक्षा और सूफीवाद सहित शिक्षाविदों के कार्यों को उजागर करने का काम किया।

प्रो. जसीम अहमद, कार्यक्रम के आयोजन सचिव ने भारत में शिक्षा की संभावनाओं में स्वर्गीय डॉ. सलामतुल्लाह के योगदान के बारे में चर्चा की । इसके अतिरिक्त एक शिक्षक, शिक्षक महाविद्यालय के प्राचार्य और फिर कार्यवाहक कुलपति के रूप में जामिया मिल्लिया इस्लामिया में उनके योगदान पर प्रकाश डाला गया। प्रो. अहमद ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनकी उपलब्धियों के बारे में भी चर्चा की। साथ ही उनके द्वारा शुरू किए गए शिक्षक प्रशिक्षण और अनौपचारिक शिक्षा विभाग में नवाचारों और प्रयोगों को याद किया गया, जिसने वर्षों से विभाग को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है।

शिक्षा संकाय की डीन प्रो. सारा बेगम ने अपने संबोधन में डॉ. सलामतुल्लाह और शिक्षा के प्रति उनके जुनून को याद किया, जिसने छात्रों की अनेक पीढ़ियों को प्रेरित किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने व्याख्यान के विषय पर प्रकाश डाला और शिक्षा पर सूफीवाद के व्यापक प्रभाव और समाज के विकास में सूफीवाद की विरासत पर रोशनी डाली । व्याख्यान की आयोजन सचिव प्रो. वीरा गुप्ता ने औपचारिक रूप से अतिथि वक्ता प्रो. एस.एम. अजीजुद्दीन हुसैन का परिचय कराया। वर्ष 1976 से उनकी शैक्षणिक यात्रा और उपलब्धियों को रेखांकित किया गया। प्रो गुप्ता ने व्याख्यानों, मध्यकालीन इतिहास में शोध कार्य, जामिया मिल्लिया इस्लामिया में प्रशासनिक भूमिकाओं और शिक्षा क्षेत्र में 41 वर्षों के अपने विशिष्ट करियर के माध्यम से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उनके योगदान के बारे में चर्चा की।

अतिथि वक्ता प्रोफेसर एस.एम. अजीजुद्दीन हुसैन ने इस अवसर पर इस्लाम के सिद्धांतों में महिलाओं के सशक्तिकरण के बारे में चर्चा की। उन्होंने इतिहास में राजशाही व्यवस्था में महिलाओं की शिक्षा की अनदेखी के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि जब मध्यकाल में सूफीवाद दक्कन में फैलने लगा तो महिलाओं की शिक्षा को महत्व दिया जाने लगा। उस अवधि के दौरान महिलाओं की शिक्षा के मार्गदर्शन

और प्रचार के लिए लगभग अठासी पुस्तकें लिखी गईं। उन्होंने देश में महिलाओं की उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए महिला उम्मीदवारों को प्रवेश देने के लिए दक्कन में विश्वविद्यालयों के योगदान पर भी चर्चा की। उन्होंने भारत में विभिन्न क्षेत्रों की उन महिला विद्वानों के नामों पर प्रकाश डालते हुए अपने व्याख्यान का समापन किया, जिन्होंने अपने शैक्षणिक प्रयासों में महान ऊंचाइयों को छुआ।

प्रो. अजीजुद्दीन के व्याख्यान के उपरांत जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलपति प्रोफेसर मजहर आसिफ ने अध्यक्षीय भाषण दिया। अपने ज्ञानवर्धक भाषण में उन्होंने 'स्व' की खोज और ईश्वर के साथ अपना रिश्ता स्थापित करने में सूफीवाद की भूमिका का उल्लेख किया। प्रो. आसिफ ने यह कहा कि , "जैसे छात्र शिक्षक की भूमिका को अर्थ देते हैं, वैसे ही हमारा विश्वास ईश्वर के अस्तित्व को अर्थ देता है"। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सूफी ईश्वर को अपना प्रिय मानते हैं। उन्होंने इस बात पर विचार-विमर्श करके अपनी बात को समाप्त किया कि वास्तविक अर्थों में सूफी होना क्या है।

विभाग के संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों और सुधि दर्शकों के समक्ष स्मारक व्याख्यान दिया गया। कार्यक्रम का समापन प्रो. रूही फातिमा द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ और तदुपरान्त राष्ट्रगान गाया गया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया